



गाय के लंपी रोग का उपचार

विवेक जोशी*, उमेश डिमरी**, धर्मेन्द्र कुमार सिन्हा*** और भोजराज सिंह***

लंपी या एल.एस.डी. अथवा डेलेदार त्वचा रोग विषाणुजनित संक्रामक रोग है। यह एक सीमापारिक रोग है। यह तेजी से राष्ट्रीय सीमाओं के आरपार फैल सकता है तथा विषम परिस्थितियों में महामारी का रूप ले सकता है। एल.एस.डी. विषाणु पालतू मवेशियों और भैंसों को प्रभावित करने वाला एक कैप्रीपॉक्स विषाणु है। त्वचा के नीचे गांठें निकलना लंपी त्वचा रोग की विशेषता है। इस घातक रोग के कारण पशुपालकों को गंभीर आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ता है।

राजस्थान और गुजरात में क्रमशः 16 जिलों में 4000 से अधिक तथा 20 जिलों में 1500 से ज्यादा मवेशियों में लंपी त्वचा रोग के कारण मौत की पुष्टि की जा चुकी है। इस रोग से दूध की पैदावार और पशुओं की खाल को नुकसान पहुंचता है। इसके साथ ही गर्भपात और बांझपन का खतरा भी बढ़ जाता है। लंपी त्वचा रोग, मानव को संक्रमित नहीं करता है, लेकिन दूध को उबालने या पाश्चुरीकरण जैसे

*वैज्ञानिक (पशु औषधि), जानपदिक रोग विभाग;
प्रधान वैज्ञानिक, पशु औषधि विभाग; *प्रधान वैज्ञानिक, जानपदिक रोग विभाग, भाकृअनुप-भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली-243122 (उत्तर प्रदेश)

खाद्य स्वच्छता प्रोटोकॉल को हमेशा बनाए रखना चाहिए।

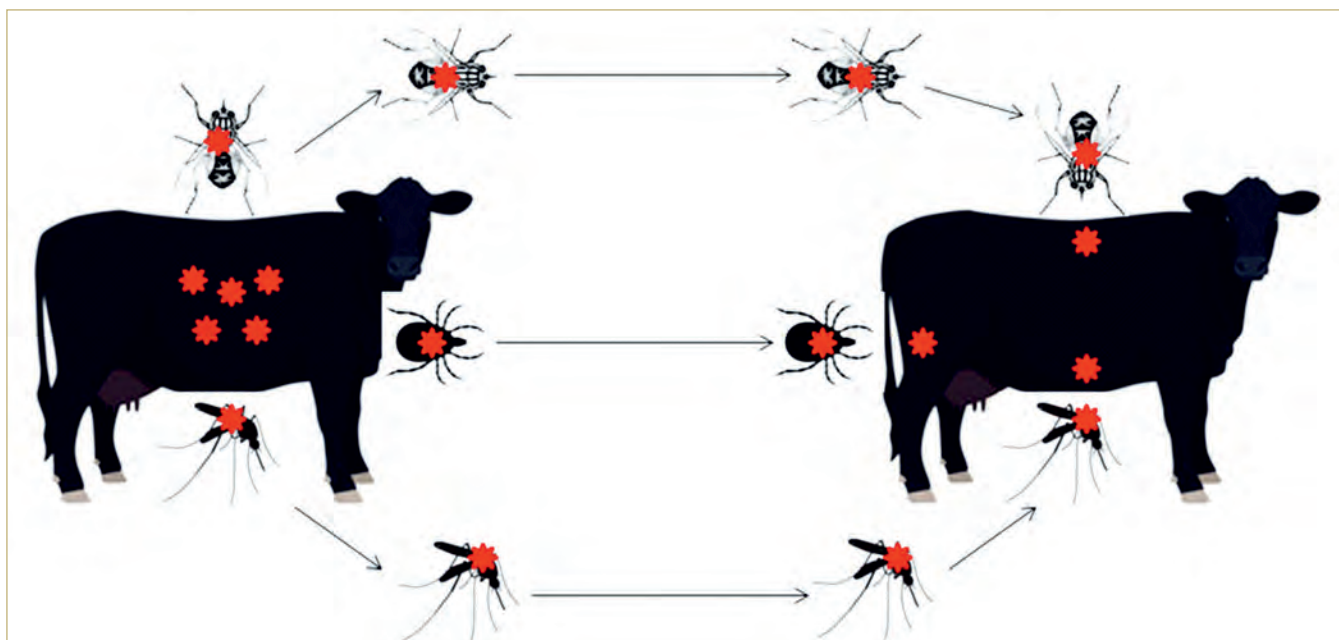
भौगोलिक विस्तार

सर्वप्रथम वर्ष 1929 में जाम्बिया में लंपी त्वचा रोग की पुष्टि होने के बाद से वर्ष 1986 तक यह रोग उपसहारा अफ्रीका के देशों तक ही सीमित था। भारत में पहली बार अगस्त 2019 में लंपी त्वचा रोग की ओडिशा के मयूरभंज और भद्रक जिलों से पुष्टि की गयी थी। वर्तमान में देश के अधिकांश राज्यों में इस रोग का प्रकोप देखने को मिला, जिनमें राजस्थान, गुजरात, ओडिशा, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और पंजाब प्रमुख हैं।

जानपदिक रोगविज्ञानी कारक

लंपी त्वचा रोग का प्रकोप कई वर्षों के

अंतराल पर महामारी के रूप में दिखाई देता है। इसके विषाणु का कोई विशिष्ट प्राकृतिक स्रोत ज्ञात नहीं है। यह भी पता नहीं चला है कि महामारी के बीच विषाणु कैसे और कहाँ जीवित रहता है। आमतौर पर, इस रोग का प्रकोप मौसमी होता है। अप्रतिरक्षित मवेशियों की बढ़ती संख्या तथा रक्त-भक्षी रोगवाहकों (मक्खी, मच्छर, किलनी, जूँ) की बहुतायत में मौजूदगी लंपी त्वचा रोग के व्यापक प्रकोपों की संचालक होती हैं। सामान्यतः इसकी रुग्णता दर 2-45 प्रतिशत और मृत्यु दर 10 प्रतिशत तक होती है। इससे देसी और उच्च दूध उत्पादन वाली गायें सबसे अधिक तथा गंभीर रूप से प्रभावित होती हैं।



रक्त-भक्षी वाहकों के माध्यम से लंपी त्वचा रोग विषाणु का संचरण

रोग का संचरण

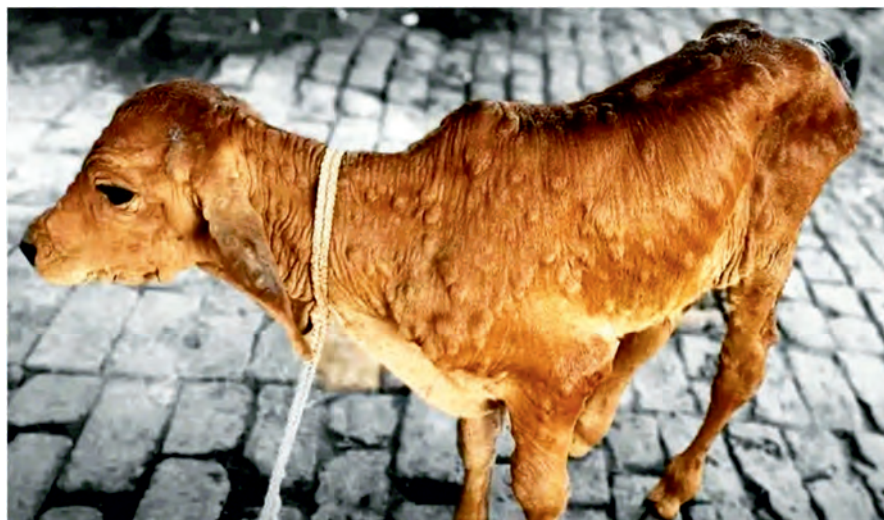
इसका संचरण मुख्यतः रोगवाहक के माध्यम से होता है। मक्खी, मच्छर और किलनी इसके रोगवाहक होते हैं। संक्रमित सांड के वीर्य में भी यह विषाणु पाया जाता है, जिससे प्राकृतिक मैथुन या कृत्रिम गर्भाधान गायों के लिए संक्रमण का स्रोत हो सकता है।

निदान

लंपी त्वचा रोग के गंभीर मामले अत्यधिक विशिष्ट होते हैं, जिसके कारण उनकी आसानी से पहचान की जा सकती है। इसके प्रारंभिक एवं हल्के मामलों की पहचान के लिए संदिग्ध पशुओं के खून, लार, नाक के स्राव, त्वचा के घाव/पपड़ी के नमूने पी.सी.आर. जांच के लिए प्रयोगशाला में भेजे जाते हैं।

रोग के लक्षण

- इसके शुरुआती लक्षण होते हैं—आंख और नाक से स्राव।
- संक्रमण के चलते कंधे और जांघ की लसिका ग्रंथियों (लिम्फ नोड्स) में सूजन आने लगती है, जिससे संक्रमण का पता लगाया जा सकता है।
- एक सप्ताह तक तेज बुखार (>105 डिग्री फॉरेनहाइट या 40.5 डिग्री सेल्सियस) बना रह सकता है।
- दूध उत्पादन में तेजी से गिरावट देखी जाती है।
- गायों की त्वचा में $10-50$ मि.मी. व्यास की गांठें निकलने लगती हैं।
- मुंह-नाक की श्लेष्मा झिल्लियों की गांठों में परिगलन से पशुओं के मुंह से अत्यधिक लार तथा नाक से पीबयुक्त स्राव गिरने लगता है।
- आमतौर पर, गांठ के केंद्र में नासूर हो जाता है और शीर्ष पर एक पपड़ी बन जाती है।
- निमोनिया और थनैला इस रोग की सामान्य जटिलताएं हैं।
- पोस्टमॉर्टम जांच में श्वसन व पाचन तंत्र में तथा आंतरिक अंगों की सतह पर चेचक के जैसे दाने/गांठें पाई जाती हैं।



लंपी त्वचा रोग से संक्रमित बछड़ा

रोकथाम

- **रोगनिरोधी टीकाकरण:** प्रभावित क्षेत्रों में वार्षिक टीकाकरण की सिफारिश की जाती है। लंपी-प्रोवैकाइंड (पहली स्वदेशी वैक्सीन) की 1 खुराक गाय/भैंसों में 1 साल तक बचाव कर सकती है। इसके अतिरिक्त, बकरियों में दिया जाने वाला बकरी-पॉक्स का टीका (रक्षा-गोट पॉक्स, गोट पॉक्स वैक्सीन) गायों में लगाना लाभकारी होता है। सभी मवेशियों को 3-6 महीने की उम्र में 1 मि.ली. अवत्वचीय खुराक दी जानी चाहिए।
- देश की सीमाओं पर मवेशियों की

आवाजाही सख्ती से नियंत्रित अथवा पूरी तरह से प्रतिबंधित कर देनी चाहिए।

- संचरण के जोखिम को कम करने के लिए मवेशियों का नियमित रूप से कीट निवारक से उपचार करें तथा पशुशाला के भीतर मच्छररोधी जालियों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- पशुशाला के भीतर तथा आस-पास की जगहों पर जल-जमाव न होने दें। नीम के पत्तों को जलाकर धुआं करें या कपूर की गोलियां रखें, ताकि मच्छर-मक्खी दूर रहें।
- पशु चिकित्सकों, पशुचिकित्सा छात्रों, पशुपालकों, पशु व्यापारियों और कृत्रिम गर्भाधानकर्ताओं के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए।

नियंत्रण

- लंपी त्वचा रोग के व्यापक हो जाने के बाद प्रभावी नियंत्रण अक्सर कठिन होता है।
- **आपातकालीन रिंग टीकाकरण:** प्रभावित क्षेत्र से 10 कि.मी. के अर्धव्यास में आने वाले सभी मवेशियों का टीकाकरण अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए। फिलहाल इसके लिए बकरी-पाँक्स का टीका (3 मि.ली. सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों में, 1 मि.ली. कम प्रभावित/अप्रभावित क्षेत्रों में) प्रयोग में लाया जा रहा है।
- लंपी त्वचा रोग का संदेह और/या पुष्टि होने पर जीवित गाय/भैंसों की खरीद-फरोख्त तथा पशु मेलों पर तत्काल प्रतिबंध लगा देना चाहिए।
- प्रभावित फार्म परिसर का कीटाणुशोधन (फिनाइल, 2-3 प्रतिशत सोडियम हाइपोक्लोराइड के घोल से) किया जाना चाहिए।
- फार्म जैव-सुरक्षा को उच्चतम स्तर तक बढ़ाने के लिए आवश्यक सेवाओं को छोड़कर अन्य सभी गैर-आवश्यक कार्यों के लिए फार्म में प्रवेश प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।
- नए खरीदे गए पशुओं को कम से कम 28 दिनों के लिए झुंड से अलग रखा जाना चाहिए।
- मृत पशु को गांव के बाहर लगभग 6 फीट गहरे गड्ढे में चूने अथवा नमक के साथ दबा दें।



लंपी त्वचा रोग से होने वाले नुकसान

मानक उपचार

लंपी त्वचा रोग के लिए कोई विशिष्ट विषाणुरोधी उपचार उपलब्ध नहीं है। गैर-विशिष्ट उपचार प्रायः द्वितीयक जीवाणु संक्रमण को रोकने, तेज बुखार को कम करने, भूख बढ़ाने आदि के लिए दिया जाता है।

प्रतिजैविक दवा: एनरोफ्लोक्सासिन 10 प्रतिशत (7.5 मि.ली./100 कि.ग्रा., अंतर्पेशीय, दूसरी खुराक 3 दिनों के बाद), आदि।

सूजनरोधी/ज्वररोधी दवा: मेलोक्सिकैम-पेरासिटामॉल (4 मि.ली./100 कि.ग्राम/दिन, अंतर्पेशीय, आवश्यकतानुसार) आदि।

एलर्जी विरोधी दवा: क्लोरेफेनिरामिन मेलियेट (1 मि.ली./100 कि.ग्राम/दिन, अंतर्पेशीय, 3 से 5 दिन) आदि।

मल्टीविटामिन/लहवर टॉनिक: विटामिन-बी कॉम्प्लेक्स-लीवर अर्क (5-10 मि.ली./दिन, अंतर्पेशीय, 3 से 5 दिन) आदि।

घाव भरने वाला स्प्रे/मक्खी विकर्षक स्प्रे/मरहम: टॉपिकवोर स्प्रे, लोरेक्सेन स्प्रे, हायमैक्स मरहम (रोजाना 3 से 4 बार)।

घरेलू उपचार

खिलाई जाने वाली औषधि

पान के पत्ते (10), काली मिर्च (10 ग्राम/2 चम्मच), नमक (10 ग्राम/2 चम्मच)

और गुड़ (जरूरत के अनुसार) को पीसकर एक खुराक बना लें।

दिन-1: 1 खुराक हर 3 घंटे में पशु को खिलाएं।

दिन 2 से 14: 3 खुराक दिनभर (सुबह, दोपहर, शाम) में पशु को खिलाएं। **घावों पर लगाई जाने वाली औषधि**

कुप्पी के पत्ते (1 मुट्ठी), लहसुन की कलियां (10), नीम के पत्ते (1 मुट्ठी), मेहंदी के पत्ते (1 मुट्ठी), तुलसी के पत्ते (1 मुट्ठी) और हल्दी पाउडर (20 ग्राम/4 चम्मच) को पीसकर पेस्ट बना लें। इसके बाद पेस्ट में तिल अथवा नारियल का तेल (500 मि.ली.) मिलाकर उबालें और ठंडा कर लें। घाव को साफ करके इस औषधि को नियमित रूप से लगाएं।

होम्योपैथिक उपचार

होमिओनेस्ट मैरीगोल्ड एल.एस.

डी.-25 किट: इस किट में 2 दवाएं होती हैं: (1) होमिओनेस्ट वी ड्रॉप्स नं. 25 प्रतिशत 20 बूंदें रोजाना 4 बार पशु को पिलाएं। (2) मैरीगोल्ड प्लस एंटीसेप्टिक स्प्रे: रोजाना 3 बार पशु के घाव पर स्प्रे करें। इस होम्योपैथिक पशु औषधि का कम से कम 2 से 3 हफ्तों तक अथवा रोगी पशु के ठीक होने तक प्रयोग किया जाना चाहिए।